रिकार्ड–जाग सजनियां जाग.....ओमशांति प्रातःक्लास 11–4–67
बच्चों ने यह गीत तो अनेक बाद सुना होगा। साजन सजनियों को कहते हैं। उनको साजन कहा जाता है जब शरीर में आते हैं। नहीं तो वो बाप है। तुम बच्चे हो। तुम सब शक्तियां हो। भगवान को याद करती हो। ब्राइड्स ब्राइडग्रूम को याद करती हैं। सबका माशूक है ब्राइडग्रूम। वो बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब जागो। अब नया युग आता है। नया माना ही सतयुग। पुरानी दुनियां है कलियुग। अब बाप आये हुए हैं तुमको स्वर्गवासी बनाते हैं। कोई मनुष्य तो कह ना सके कि हम तुमको स्वर्गवासी बनाते हैं। सन्यासी तो स्वर्ग और नर्क को बिल्कुल ही नहीं जानते हैं। जैसे और धर्म हैं वैसे ही सन्यासियों का भी एक और धर्म है। वो कोई आदि सनातन देवी देवता धर्म के नहीं हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म की भगवान ही आकर स्थापना करते हैं। जो नर्कवासी हैं वो ही फिर सतयुगी स्वर्गवासी बनते हैं। अभी तुम नर्कवासी नहीं हो। अभी तुम संगम पर हो। संगम होता है बीच का समय। संगम पर स्वर्गवासी बनने का तुम पुरुषार्थ करते हो। इसलिए ही संगमयुग की महिमा है। कृष्ण का मेला भी यही है (सर्वोत्तम) । इसको ही (पुरुषोत्तम) युग कहा जाता है। तुम जानते हो हम सब एक बाप के बच्चे हैं। ब्रदरहुड कहते हैं ना। सभी आत्माएं आपस में भाई2 हैं। कहते हैं हिंदू–चीनी भाई2। अब धर्म के हिसाब से भाई2 नहीं हैं। आत्मा के हिसाब से सब भाई2 हैं। यह ज्ञान तुमको अभी मिला है। बाप समझाते हैं तुम मुझ बाप की संतान हो। अभी तुम सम्मुख सुनते हो। वो तो सिर्फ कहते मात्र कह देते थे। सब आत्माओं का बाप एक है। मेल अथवा फीमेल सबमें आत्मा है। इस हिसाब से भाई2 हैं। फिर भाई–बहन। फिर इसके स्त्री–पुरुष हो जाते हैं तो बाप आकर बच्चों को समझाते हैं। गाया भी जाता है आत्माएं..... ऐसे नहीं कहा जाता कि नदियां और सागर अलग रहे बहुकाल.....बड़ी2 नदियां तो सागर से मिली रहती हैं। यह भी बच्चे जानते हैं नदियां सागर के बच्चे हैं। सागर से पानी निकलता है बादलों द्वारा। फिर बरसात पड़ती है पहाड़ों पर। फिर नदियां बन जाती हैं। तो सभी हो जाते हैं सागर के बच्चे और बच्चियां। बहुतों को यह भी पता नहीं कि पानी कहां से निकलता है। यह भी सिखाया जाता है। यह अब बच्चे जानते हैं कि ज्ञान सागर एक ही बाप है। यह भी समझाया जाता है कि तुम सभी आत्माएं हो। बाप एक है। आत्मा भी निराकार है। बाप भी निराकार है। फिर जब साकार में आते हैं तो पुनर्जन्म लेते हैं। बाप भी जो साकार में आवे तब जाकर मिले। बाप का मिलना एक बारी ही होता है। इस समय आकर बाप सभी से मिलते हैं। यह भी जानते जावेंगे कि भगवान कोई है। गीता में तो कृष्ण का नाम डाल दिया है ;परंतु कृष्ण तो यहां आ नहीं सकते हैं। वो कैसे गाली खावे?यह तुम जानते हो कृष्ण की आत्मा इस समय है। पहले2 तुमको ज्ञान मिलता है आत्मा का। तुम आत्मा हो। तुम अपने को शरीर समझकर इतना समय चले हो। अब बाप आकर देही अभिमानी बनाते हैं। साधु–संत आदि कब तुम को देहीअभिमानी नहीं बनाते हैं। वो तो और ही उल्टा–सुल्टा बता देते हैं। तो यह बाप ही आकर समझाते हैं कि तुम बच्चे हो। तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम परमधाम के रहने वाले हैं। हम फिर यहां पार्ट बजाने आये हैं। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह ड्रामा कोई ने बनाया नहीं है। तुमसे कोई पूछते हैं यह ड्रामा कब से शुरू हुआ?बोलो यह तो अनादि ड्रामा है। इनका आदि–अंत नहीं होता है। पुराना सो नया ,नया सो पुराना बनता है। यह पाठ तो बच्चों को पक्का है। तुम जानते हो यह नई दुनियां कब बनती है। पुरानी कब होती है। यह भी कोई2 की बुद्धि में ही पूरी रीति है। बुद्धि में तो रहना ही चाहिए ना। तुम जानते हो कि अभी नाटक पूरा होता है। फिर रिपीट होगा। जो कि शुरू में पार्ट बजाया था वो ही फिर रिपीट होगा। बरोबर हमारा 84जन्मों का पार्ट पूरा हुआ। अब बाबा हमको ले जाने के लिए आया हुआ है। बाप गाइड भी तो है ना। तुम सब पण्डे हो। पण्डे लोग यात्राओं पर ले जाते हैं। वो हैं जिस्मानी पण्डे। तुम हो रुहानी। इसलिए तुम्हारा नाम पाण्डव

सेना गाया हुआ है। तुम सेना भी हो। पण्डे भी हो। रुहानी यात्रा पर ले जाते हो। तुम्हारी यह पाण्डव गवर्मेंट है ;परंतु गुप्त। पांडव गवर्मेंट कौरव और यादव गवर्मेंट क्या करत भये। यह इस समय की बात है जबकि महाभारत की लड़ाई का समय भी सिर पर है। अनेकों धर्म भी हैं। दुनियां भी तमोप्रधान है। वैरायटी धर्मों का झाड़ सारा पुराना हो गया है। तुम जानते हो इस झाड़ का पहला2 फाउंडेशन है आदि सनातन देवी देवता धर्म का। पहले2 सतयुग में थोड़े ही होंगे। फिर वृद्धि को पाते हैं। पहले थे सतोप्रधान। अभी हैं तमोप्रधान। यह किसी को भी पता नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। स्टुडेंट में कोई अच्छे समझदार होते हैं। अच्छी धारणा करते हैं और करने का शौक होता है। कोई तो अच्छी रीति (धारणा) करते हैं ,कोई मीडियम ,कोई थर्ड क्लास ,कोई फोर्थ। प्रदर्शनी में तो रिफाइन रीति समझाने वाले चाहिए। पहले2 तो कोई को भी यही बताना है कि दो बाप हैं। एक है बेहद का पारलौकिक बाप। दूसरा है हद का लौकिक बाप। भारत को बेहद का वर्सा मिला है। भारत स्वर्ग था। आज से 5000वर्ष पहले। अब स्वर्ग के रचयिता को तो हैविनली गॉड फादर कहा जाता है। भारत स्वर्ग था जो ही फिर नर्क बना है। इसको आसुरी राज्य.....कहा जाता है। भक्ति भी पहले2 अव्यभिचारी होती है। एक शिवबाबा को ही याद करते हैं। अब फिर बाबा कहते हैं कि एक ही से सुनो। यह है अव्यभिचारी ज्ञान। और कोई से जो सुनेंगे वो सब झूठ,ईवल ही बताते हैं। बाप अभी तुमको सच्चा सुनाकर पुरुषोत्तम बनाते हैं। ईविल बातें सुनते2 तुम कनिष्ट बन गये हो। कितने ढेर मनुष्य हैं। झूठ ही झूठ सुनते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। गीता का भगवान कृष्ण है। कितना (फर्क) हो जाता है। कहां तो पुनर्जन्मरहित भगवान, कहां पूरे 84जन्म लेने वाला कृष्ण। गीता कितनी खंडन हो गई है। गीता (झूठी), भागवत झूठी हो गई है। (बड़ी) लम्बी झूठ लिख दी है। गीता सुनाई बाप ने और नाम रख दिया है बच्चे का। अभी कहा जाता है पतित दुनियां। सम्पूर्ण पतित है। सतयुग में होते हैं सम्पूर्ण पावन (ल.ना.)। इन बातों को जानते नहीं हैं। किसी को (कहो) कि कृष्ण पुनर्जन्म लेते हैं तो एकदम बिगड़ पड़ेंगे। वो तो समझते हैं कि कृष्ण भगवान है। यथा राजा—रानी तथा प्रजा। सब भगवान—भगवती हैं। वो फिर उठा लेते हैं। यह सब उठाया है शास्त्रों से। शास्त्र हैं ही कर्मकाण्ड के लिए। वो है भक्तिमार्ग का ज्ञान। अज्ञान को अंधेरा, ज्ञान को सोझरा कहा जाता है। सोझरा माना ब्रह्मा का दिन। अंधेरा ....ब्रह्मा की रात। यह सब प्वाइंट्स धारणा करने की है। नम्बरवार तो हर बात में होते ही हैं। डॉक्टर कोई तो 10/20हजार भी एक केस का लेते हैं। कोई तो देखो तो खाने लिए भी नहीं होता है। (बैरिस्टरों) में भी ऐसे होते है। तुम भी जानते हो जितना पढ़ेंगे और पढ़ावेंगे उतना उंच पद पावेंगे। फर्क तो है ना। दास—दासियों में भी नम्बरवार होते हैं। सारा मदार ही पढ़ाई पर है। अपने से पूछना चाहिए हम कितना पढ़ते हैं। भविष्य जन्म जन्मांतर क्या बनेंगे। जन्म जन्मांतर जो बनेंगे सो ही कल्प कल्पांतर बनेंगे। इसलिए ही पढ़ाई पर तो पूरा अटेंशन देना चाहिए। मूत पीना तो एकदम छोड़ देना चाहिए। मूत पीने वाले मूत पीने बिना रह नहीं सके। समझते हैं कि यह तो चला ही आता है। बच्चे मूत से ही पैदा होते हैं। इसलिए ही उनको मूत पलीती कहा जाता है। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहा जावेगा। मूत पलीती कपड़ धोये यहां होता है। इस समय सबका चोला सड़ा हुआ है। तमोप्रधान (हैं) ना। यह भी समझने की बात है ना। सबसे पुराना चोला किसका है?हमारा। हम इस शरीर को बदलते रहते हैं। आत्मा पुरानी पतित बनती जाती है तो (शरीर) भी पुराना पतित होता जाता है। शरीर बदलना होता है। आत्मा तो नहीं बदलेगा। शरीर बूढ़ा हो जाता है तो फिर मृत्यु आ जाती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। सबका पार्ट है। आत्मा को कहा जाता है अविनाशी। आत्मा खुद कहती है मैं शरीर छोड़ती हूँ। देही अभिमानी बनना पड़े। मनुष्य सब देह अभिमानी हैं। आधा कल्प है देही अभिमानी।

व्हां भी समझते हैं कि हम आत्मा हैं। हमको यह पुराना शरीर छोड़कर दूसरा लेना है। इसलिए मोहजीत राजा कहा जाता है। मोहजीत राजा की भी कथा है ना। वो भी बनाई हुई है। बाप समझाते हैं देवी देवतायें मोहजीत होते हैं। खुशी में एक शरीर छोड़कर दूसरा ले लेते हैं। बच्चों को यह सारा नालेज बाप द्वारा मिल रही है। तुम ही चक्र खाय अब (फिर) आकर मिले हो। जो और2 धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं वो भी आकर मिलेंगे। अपना थोड़ा बहुत वर्सा ले लेंगे। धर्म ही बदल गया है ना। पता नहीं कितना समय उस दूसरे धर्म में रहे हैं। दो/तीन जन्म ले सकते हैं। मुसलमानों को 500/600 वर्ष हुआ होगा। कोई को हिंदू से मुसलमान बना देते हैं उस धर्म में आता रहेगा। फिर यहां आते हैं। इतना समय तो भक्ति नहीं की होगी। यह है डिटेल की बातें। बाप कहते हैं इतनी बातें याद ना कर सको। अच्छा, अपने को बाप का बच्चा तो समझो। अच्छे2 बच्चे भी भूल जाते हैं। बाप को याद नहीं करते हैं। माया इसमें ही भुलाती है। तुम भी तो पहले माया के मुरीद थे ना। अब ईश्वर के (बनते) हो। यह ड्रामा में पार्ट है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। तुम आत्मा नंगी आये थे तो तुम पवित्र थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 तुम पतित बने हो। अब फिर बाप कहते हैं नष्टोमोहा बनो। इस शरीर में भी मोह नहीं रहे। आत्मा समझती है कि इस पुरानी दुनियां में ही दुःख देने वाले हैं। इसलिए ही बेहद का वैराग आता है। पुरानी दुनियां को ही भूल जाओ। हम नंगे आये थे ,अब नंगे ही वापस जाता हूँ। बुद्धि से सब भूल जाना है। अब यह दुनियां ही खतम होनी है। अब हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें?इसके लिए भी बाप कहते हैं कि मामेकम् याद करो तो पावन बन जावेंगे। यह युक्ति कल्प2 तुमको बताता हूँ। बाप ही कहते हैं मामेकम् याद करो। कृष्ण तो कह नहीं सकते कि मामेकम् याद करो। कृष्ण तो सतयुग में होता है। बाप ही कहते हैं मुझे तुम पतित–पावन भी कहते हो तो अब मुझे याद करो। मैं यह युक्ति बताता हूँ पावन बनने की। कल्प2 यह युक्ति बताता हूँ। जब पुरानी दुनियां होती है तो भगवान को आना होता है। मनुष्यों ने ड्रामा की आयु बहुत लम्बी–चौड़ी कर दी है तो मनुष्य ही भूल गये हैं। अब तुम जानते हो कि यह संगमयुग है। यह है पुरुषोत्तम बनने का युग। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अंधेरे में पड़े हैं। .....अज्ञान अंधेरा, ज्ञान है सोझरा। सतयुग–त्रेता में भक्ति होती नहीं। सीढ़ी उतरते हैं तो भक्ति शुरू होती है। पहले अव्यभिचारी भक्ति , फिर व्यभिचारी होती है। भक्ति भी (सतोप्रधान), सतो, रजो, तमो होती है। इस समय है तमोप्रधान। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। तुमने ही सबसे जास्ती भक्ति की है। अब बच्चे जानते हैं कि भक्तिमार्ग खतम होता है। भक्तिमार्ग है ही मृत्युलोक में। मृत्युलोक के बाद फिर आवेगा अमरलोक। तुम इस समय ज्ञान लेते हो। फिर भक्ति का नाम–निशान नहीं रहेगा। हे भगवान! ,हे राम! यह सब भक्तिमार्ग के अक्षर हैं। इसमें कोई आवाज नहीं करना है। बाप ज्ञान का सागर है तो आवाज थोड़े ही करते हैं। उनको कहा जाता है पतित–पावन सुख का सागर ,शांति का सागर। तुमको सुनाने के लिए भी तो उनको शरीर चाहिए ना। भगवान की भाषा क्या है?यह भी कोई जानते थोड़े ही हैं। जिसकी जो भाषा वो ही सीखनी पड़े। ऐसे तो नहीं कि बाबा ही सब भाषाओं में बोलेंगे। नहीं उनकी भाषा ही हैं हिंदी। बाबा को यह भाषायें आदि थोड़े ही सीखनी हैं। सीखने में ही (वर्ष) लग जावे। बाप तो एक ही भाषा में समझाते हैं। फिर ट्रांसलेट कर तुम समझते हो। फारेनर्स आदि जो भी मिले उनको बाप का परिचय देना है। बाप आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। त्रिमूर्ति पर समझाना चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ब्र.कु.कु. हैं। कोई भी आवे तो पहले तो उनसे पूछो कि किसके पास आये हो?बोर्ड तो लगा हुआ है। प्रजापिता। वो तो रचने वाला हो गया ना ;परंतु उनको भगवान नहीं कह सकते हैं। भगवान निराकार को ही कहा जाता है। (फिर भी) ओम।